04 11 24

Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh.

कक्षा- तीसरी

शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय- हिन्दी साहित्य

पुस्तक : तरंग हिन्दी पाठमाला-3

पाठ- 12 'अनमोल मित्रता' लेखक- प्रो० गंगादत्त शर्मा

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा तीसरी की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक में दिए पाठ-12 'अनमोल मित्रता' को पढ़ेंगे तथा समझेंगे।

बच्चो ! यह पाठ हमें सच्ची मित्रता के महत्त्व की शिक्षा देता है। सच्ची मित्रता के वैसे तो कई उदाहरण हैं जैसे कर्ण और दुर्योधन की मित्रता, राम और सुग्रीव की मित्रता आदि। लेखक ने इस पाठ में श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता का वर्णन किया है।

द्वारिका में श्रीकृष्ण सिंहासन पर बैठे थे। सभी मंत्री भी अपने-अपने आसन पर बैठे हैं। द्वारपाल आकर श्रीकृष्ण को बताता है कि दरवाज़े पर एक आदमी आपके दर्शन करना चाहता है। श्रीकृष्ण के पूछने पर कि वह कौन है तो द्वारपाल ने बताया कि उसका शरीर दुबला-पतला है। कपड़े फटे-पुराने हैं, उसके सिर पर न पगड़ी है, न पैरों में जूते हैं। उसे देखकर ऐसा लगता है कि पहली बार शहर में आया है। वह स्वयं को सुदामा नाम का ब्राह्मण

कक्षा - तीसरी

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी साहित्य

कहता है। यह सुनकर श्रीकृष्ण ने द्वारपाल से सुदामा को आदर सहित अंदर लाने को कहा।

सुदामा को देखते ही श्रीकृष्ण सिंहासन से उठकर उसे गले लगा लेते हैं। सुदामा के यह कहने पर मित्र तुम्हारे वस्त्र गंदे हो जाएँगे लेकिन कृष्ण को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, उन्हें अपने मित्र से गले लगकर ही शाँति मिलती है। जब श्रीकृष्ण सुदामा को सिंहासन की ओर ले जाकर बैठने के लिए कहते हैं तो सुदामा डरते-डरते श्रीकृष्ण से कहता है कि यह तो द्वारिका का सिंहासन है इस पर तो केवल राजा ही बैठ सकता है। श्रीकृष्ण, सुदामा के मना करने पर भी अपने हाथ से पकड़कर उसे सिंहासन पर बिठाते हैं और पूछते हैं कि इतने वर्ष कहाँ रहे ? सुदामा श्रीकृष्ण की बात सुनकर चुप ही रहता है।

श्रीकृष्ण अचानक सुदामा के पैरों की ओर देखकर चौंक उठते हैं। वे सुदामा से कहते हैं कि तुम्हारे पैरों में काँटे चुभे हैं और बिवाइयों से भी खून बह रहा है। वे सेवक से जल से भरा बर्तन मँगवाते हैं। सुदामा को तो पैदल चलने की आदत थी अतः वे कैसे श्रीकृष्ण से अपने पैर धुलवा सकते हैं। परन्तु मित्र होने के नाते श्रीकृष्ण को इसमें कोई बुराई नहीं दिखती और आज तो वे अतिथि भी थे। परात में पैर धोते हुए उनकी आँखों से आँसू भी बहने लगते हैं। सुदामा यह देखते हैं कि उनका मित्र धनी होकर भी अपने मित्र का इतना सम्मान कर

कक्षा - तीसरी

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी साहित्य

कर रहे हैं ... उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आँसू पोंछकर कहा कि तुम स्वयं को गरीब क्यों समझते हो। मित्रता ही सबसे बड़ा धन है। श्रीकृष्ण ने सुदामा से पूछा कि भाभी ने उनके लिए क्या भेजा है। बगल में दबी पोटली को और दबाते हुए सुदामा ने कहा कि कुछ भी नहीं। श्रीकृष्ण जानते थे कि भाभी ने अवश्य ही उनके लिए कुछ न कुछ अवश्य भेजा होगा इसलिए वे सुदामा से पोटली खींचकर खोल लेते हैं। वे देखते हैं कि पोटली में मुट्ठी भर चावल हैं और उन्हें चबाने लगते हैं। वे सुदामा से कहते हैं कि ये चावल तो बहुत स्वादिष्ट हैं। इतना स्वाद तो राजमहल के चावलों में भी नहीं है।

सुदामा ने अपने मित्र से कहा कि उसे लग रहा था कि धनी हो जाने के कारण तुम मुझे नहीं पहचानोगे लेकिन पत्नी ने ज़िद्द करके मुझे भेज दिया। सुदामा की बात सुनकर श्रीकृष्ण ने सुदामा को गुरु जी की कही बात याद दिलाई कि गुरु जी ने कहा था कि वह सच्चा मित्र नहीं जो निर्धन को भूल जाए। सुदामा ने कहा हाँ याद है और आज देख भी लिया है। जब सेवक थालों में भोजन लेकर आया तो श्रीकृष्ण ने सुदामा को अपने हाथों से भोजन खिलाया। भोजन करने के बाद श्रीकृष्ण ने सुदामा से कुछ देर शयनकक्ष में विश्राम करने के लिए कहा। सुदामा, श्रीकृष्ण की आज्ञा मानकर चले जाते हैं।

कक्षा- तीसरी

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय- हिन्दी साहित्य

बच्चो! अब यह पाठ समाप्त हो चुका है। इस प्रकार आपने देखा कि मित्रता अनमोल होती है। इसे सदा बनाए रखना चाहिए।

गृहकार्य

सभी बच्चे इस पाठ को दो से तीन बार शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए ऊँचे स्वर में पढ़ेंगे। सभी निम्न कार्य को अपनी-अपनी कॉपी में लिखेंगे।

1. कठिन शब्द

1. मित्रता 2. वस्त्र 3. सम्मान 4. द्वारपाल
5. पात्र 6. निर्धन 7. अतिथि 8. सिंहासन
9. स्वादिष्ट 10. रक्त

2. सुलेख

सभी छात्र अपनी कॉपी का एक पेज़ सुलेख के रूप में लिखेंगे।

3. शब्द अर्थ

1. शयन कक्ष - सोने का कमरा पात्र - बरतन
अतिथि - मेहमान सम्मान - आदर
निर्धन - गरीब, जिसके पास धन न हो
बिवाइयाँ - पैरों की एड़ियों और तलवों का फटना
पगड़ी - साफ़ा, सिर पर लपेट कर पहना जाने वाला वस्त्र

धन्यवाद।

[Last Page]